

कहानी 1

सीता हरण

सीता का हरण करने रावण ने राक्षस मारीच से मदद माँगी। मारीच ने अपनी जादुई शक्ती से स्वर्ण मृग का रूप धारण किया और जहाँ राम, सीता और लक्ष्मण रहते थे उस आश्रम की ओर चल पड़ा। सीता की नज़र स्वर्ण मृग पर पड़ी और उसने राम से वह स्वर्ण मृग पकड़ने के लिए कहा। राम और लक्ष्मण को स्वर्ण मृग देखकर संदेह हुआ पर सीता की ज़िद के कारण राम अकेले उस मृग को पकड़ने निकल पड़े। जाने से पहले राम ने लक्ष्मण से कहा कि सीता को अकेला न छोड़े। राम ने कुछ दूरी तक स्वर्ण मृग का पीछा किया और अपने बाण से उसे मार गिराया। उसी समय स्वर्ण मृग ने राक्षस का रूप धारण किया और वह सहायता के लिए राम की आवाज में चिल्लाने लगा। राम की चिल्लाने की आवाज सुनकर सीता ने लक्ष्मण से अनुरोध किया कि वह राम की सहायता के लिए जायें। जाने से पहले लक्ष्मण ने कुटीया के पास एक रेखा खींची और सीता से कहा कि किसी भी परिस्थिती में उस रेखा को पार न करें। जब सीता अकेली थी तब बूढ़े साधु के पेहरावे में रावण कुटीया के पास आकर भिक्षा माँगने लगा। बूढ़े साधु को देखकर सीता आश्वस्त थी। उसे भिक्षा देते वह रेखा के पार चली गई। तभी बूढ़े साधु ने रावण का रूप धारण किया और सीता का अपहरण कर उसे लंका ले गया।

कहानी से यह सीख मिलती है कि लक्ष्मण रेखा पार न करें अन्यथा गहरे संकट का सामना करना पड़ सकता है।

कहानी 2

मेंढक और कुँआ

एक झील में दो मेंढक रहते थे। एक बार गर्मी में झील सूख गई और रहने की दूसरी जगह ढूँढ़ने मेंढक चल पड़े। रास्ते में उन्होंने कुँआ देखा। एक मेंढक ने कुँए में झाँककर देखा और दूसरे से कहा कि 'यह काफी ठंडी जगह लगती है, चलो कूदते हैं'। दूसरा मेंढक समझदार था उसने कहा 'अभी नहीं दोस्त। अभी इस कुँए में पानी है, मगर यह पानी भी सूख गया तो हम बाहर कैसे निकलेंगे?'

कहानी से यह सीख मिलती है कि तुरंत लाभ की न सोचे भविष्य का भी विचार करें।